कोट (दुलचीपुर) का पुरातात्विक अध्ययन

– डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर

(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)

महामंत्री, प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन

संयुक्त मंत्री, अ.भा.दि. जैन शास्त्रिपरिषद्

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश का बुन्देलखण्ड क्षेत्र प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है। यहाँ अनेक ऐसे स्थल विद्यमान हैं , जिनमें प्राचीन सभ्यता, बसाहटों और सामाजिक जीवन के प्रमाण आज भी सुरक्षित हैं। सागर जिले के वण्डा तहसील के अंतर्गत स्थित दुलचीपुर (कोट) ऐसा ही एक स्थल है , जो स्थानीय परंपराओं , प्राचीन अवशेषों तथा ऐतिहासिक स्मृतियों के कारण महत्वपूर्ण माना जाता है।

दुलचीपुर ग्राम को स्थानीय लोग "कोट" के नाम से भी जानते हैं। "कोट" शब्द प्रायः किसी ऐसे स्थान के लिए प्रयुक्त होता है, जहाँ किसी समय परकोटे, दुर्ग या संरक्षित बस्ती का निर्माण हुआ हो। इस ग्राम के चारों ओर परकोटे और खाई के अवशेष मिलने से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि यह स्थान किसी समय महत्वपूर्ण प्रशासनिक अथवा सैन्य दृष्टि से सुरक्षित बस्ती रहा होगा।

दुलचीपुर के संबंध में स्थानीय जनश्रुतियाँ , स्थलाकृतिक संकेत और प्राचीन अवशेष इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि यहाँ कभी एक संगठित और समृद्ध ग्राम -नगर व्यवस्था विद्यमान थी।

भौगोलिक स्थिति

दुलचीपुर ग्राम मध्यप्रदेश के सागर जिले की वण्डा तहसील में स्थित है। यह ग्राम कई अन्य गाँवों से घिरा हुआ है , जिनमें सिंघपुर, नानकपुर, गोमतपुर, विलगुवां, घुटरई, कानीखेड़ीखुर्द और रानीपुर प्रमुख हैं।

यह क्षेत्र बुन्देलखण्ड के पठारी भूभाग का भाग है, जहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, तालाब, नाले और कृषि भूमि मिलकर विशिष्ट भौगोलिक संरचना बनाते हैं। दुलचीपुर का प्राकृतिक परिवेश जलस्रोतों, वृक्षों और पहाड़ियों से समृद्ध रहा है , जिससे यह प्राचीन काल में मानव बसाहट के लिए अनुकूल स्थान रहा होगा।

ग्राम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

स्थानीय बुजुर्गों की परंपरागत जानकारी के अनुसार दुलचीपुर-कोट में लगभग 500 घर और लगभग 3000 की आबादी निवास करती थी। यह ग्राम विभिन्न जातियों और समुदायों से युक्त था, जिससे यहाँ सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता दिखाई देती थी।

जनश्रुति के अनुसार इस ग्राम में 52 तालाब और 84 बेहरें (कुएँ अथवा जलस्रोत) विद्यमान थे। इन जलस्रोतों के अवशेष आज भी कुछ स्थानों पर देखने को मिलते हैं। यह तथ्य इस क्षेत्र की प्राचीन जल प्रबंधन प्रणाली और समृद्ध कृषि व्यवस्था का संकेत देता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह ग्राम शाहगढ़ राज्य के शासक श्री बखतवली शाह के अधिकार क्षेत्र में आता था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यह स्थान प्रशासनिक अथवा सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा होगा।

कोट (परकोटा) और सुरक्षा व्यवस्था

दुलचीपुर ग्राम की एक विशेषता इसका परकोटा (कोट) है। ग्राम के चारों ओर लगभग आठ से दस मीटर गहरी खाई बनाई गई थी, जिसमें वर्ष भर पानी भरा रहता था। यह खाई बाहरी आक्रमण से रक्षा के लिए बनाई गई थी।

इसके अतिरिक्त खाई के बाहर अथवा ऊपर पत्थरों से निर्मित मजबूत परकोटा बनाया गया था। इस परकोटे के कारण ही यह ग्राम "कोट" नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ग्राम में प्रवेश के लिए दो मुख्य द्वार थे , जिन पर लोहे के मजबूत फाटक लगे हुए बताए जाते हैं। इन द्वारों के दोनों ओर पहरेदारी की व्यवस्था भी थी। स्थानीय कथाओं के अनुसार यहाँ पहरेदारों की मूर्तियाँ स्थापित थीं, जो ग्राम की सुरक्षा का प्रतीक मानी जाती थीं।

जलस्रोत और तालाब

दुलचीपुर की प्राचीन बसाहट में जलस्त्रोतों का विशेष महत्व था। यहाँ अनेक तालाब और कुएँ थे, जिनमें प्रमुख रूप से रखनवाई तालाब , खजबाई तालाब, वाजला तालाब आदि का उल्लेख मिलता है।

इनके अतिरिक्त आसपास के क्षेत्र में पुरेनया, डुंडराई, खजवाई, नयाताल, करला और पालात नामक तालाब भी स्थित थे। इन तालाबों के किनारे कृषि की जाती थी , विशेषकर गेहूँ की दोहरी फसल बोई जाती थी, जो अत्यंत उपजाऊ मानी जाती थी।

जलस्त्रोतों की यह प्रचुरता इस क्षेत्र की कृषि और पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाती थी।

टाठी बेर (बेहर) की कथा

ग्राम के समीप जंगल चौकी के पास एक प्रसिद्ध बेहर (जलस्त्रोत) थी, जिसे "टाठी बेर" कहा जाता था। कहा जाता है कि राजा का हाथी यहाँ पानी पीने आया करता था। इस बेहर के संबंध में यह भी लोकविश्वास प्रचलित है कि यदि कोई निर्धन व्यक्ति वहाँ खड़े होकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करता, तो उसे टाठी (सहायता) प्राप्त हो जाती थी। इसी कारण इस बेहर का नाम टाठी बेर पड़ गया। इस बेहर का पानी कभी-कभी ऊपर तैरता हुआ दिखाई देता था, जो इसकी विशेषता मानी जाती थी।

इसके अतिरिक्त कुकरर बेहर और इमली वाली बेहर भी इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण जलस्त्रोत थे। इमली वाली बेहर के ऊपर एक विशाल इमली का वृक्ष था और उसकी सीढ़ियाँ इतनी चौड़ी थीं कि लोग सिर पर बर्तन रखकर आसानी से ऊपर-नीचे आ सकते थे।

धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल

दुलचीपुर ग्राम में अनेक धार्मिक स्थल भी थे , जो ग्राम की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण अंग थे। इनमें प्रमुख हैं–

- श्री देव ग्वाल बाबा का चबूतरा
- हनुमान जी का मंदिर
- श्री दूल्हा देव का चबूतरा
- जानकी रमण मंदिर

- जैन मंदिर
- श्री दुर्गा मुलानी का चबूतरा
- हरदौल देव का चबूतरा

इन धार्मिक स्थलों के प्रति ग्रामवासियों की गहरी आस्था थी। विशेष रूप से हरदौल देव के चबूतरे के बारे में यह मान्यता थी कि यदि वर्षा में विलंब हो , तो वहाँ प्रार्थना करने से वर्षा अवश्य होती थी।

सामाजिक संरचना

दुलचीपुर ग्राम सामाजिक रूप से बहुजातीय संरचना वाला ग्राम था। यहाँ विभिन्न जातियों के लोग निवास करते थे, जिनमें प्रमुख रूप से ठाकुर, ब्राह्मण, जैन, विश्वकर्मा, रजक, रैकवार, यादव, आदिवासी (सौर) तथा अन्य समुदाय शामिल थे।

यह विविधता इस ग्राम की सामाजिक संरचना को संतुलित और समृद्ध बनाती थी।

प्राकृतिक परिवेश

दुलचीपुर का प्राकृतिक वातावरण अत्यंत रमणीय था। ग्राम में आम , जामुन, नीम, अनार और केला जैसे वृक्ष प्रचुर मात्रा में पाए जाते थे।

ग्राम के आसपास जंगल और पहाड़ियाँ भी स्थित थीं। इनमें गरगज पहाड़ी और धोवन पहाड़ी उल्लेखनीय हैं। इन पहाड़ियों के आसपास प्राकृतिक जलस्रोत और तलैया भी स्थित हैं , जो क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ाते हैं।

समैया नाला और पशुपालन

ग्राम के निकट समैया नामक एक नाला बहता था। ग्राम में आने वाले लोग प्रायः इस नाले में अपने पैर धोते थे।

इस क्षेत्र में ग्वाल बाबा का चबूतरा भी स्थित था, जहाँ पशु चरते थे। उस समय का दृश्य ऐसा प्रतीत होता था मानो यह भूमि श्रीकृष्ण की गोपाल लीला से जुड़ी हो।

प्राचीन मठ और लोकविश्वास

ग्राम में दो प्राचीन मठ भी स्थित थे। स्थानीय परंपराओं के अनुसार इन मठों में प्राचीन काल का धन सुरक्षित है, किंतु लोकभय के कारण कोई उसे निकालने का प्रयास नहीं करता।

प्रशासनिक परिवर्तन और विस्थापन

कालांतर में इस क्षेत्र में प्रशासनिक परिवर्तन हुए। यहाँ पुलिस थाने की स्थापना की गई , जो वर्तमान में छान बीला (नवीन पुछिरा) थाना के नाम से जाना जाता है।

बाद में शासन द्वारा ग्राम को दूसरी जगह बसाने का निर्णय लिया गया। ग्रामवासियों को भूमि और मकानों के लिए मुआवजा प्रदान किया गया। भूमि के लिए लगभग 150 से 200 रुपये प्रति एकड़ तथा मकानों के लिए लगभग 1100 से 2000 रुपये तक मुआवजा दिया गया। इसके बाद ग्राम को स्थानांतरित कर नया बसाहट क्षेत्र विकसित किया गया।

पुरातात्विक महत्व

दुलचीपुर (कोट) का स्थल पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ के परकोटे , खाई, जलस्रोत, मंदिरों के अवशेष और प्राचीन संरचनाएँ इस बात के प्रमाण हैं कि यह स्थान किसी समय समृद्ध और संगठित बस्ती रहा होगा।

यदि इस स्थल का व्यवस्थित पुरातात्विक सर्वेक्षण और उत्खनन किया जाए, तो संभव है कि यहाँ से प्राचीन स्थापत्य, मृद्भाण्ड, धातु सामग्री तथा अन्य महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हों, जो इस क्षेत्र के इतिहास को और स्पष्ट कर सकते हैं।

अन्य प्राकृतिक स्थल

ग्राम के समीप एक जंगल और उसके पास धोवन नामक पहाड़ी स्थित है। इस पहाड़ी पर एक बड़ी शिला और तलैया भी है, जो प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाती है।

सामाजिक संरचना

इस ग्राम में विभिन्न जातियों के लोग निवास करते थे, जिनमें प्रमुख रूप से–

- 5 घर ठाकुर समाज
- 5 घर ब्राह्मण समाज

- 10 घर जैन समाज
- 20 घर विश्वकर्मा समाज
- 10 घर रजक समाज
- 60 घर रैकवार समाज
- 100 घर आदिवासी (सौर) समाज
- 80 घर यादव समाज
- 25 घर अन्य समुदायों के

इसके अतिरिक्त भी अनेक जातियों के लोग यहाँ निवास करते थे।

प्राकृतिक वातावरण

ग्राम में आम, जामुन, नीम, अनार, केला आदि अनेक प्रकार के वृक्ष थे। ग्राम के बाहर एक बेहर के ऊपर एक विशाल इमली का वृक्ष था , जिसके कारण उसे "इमली वाली बेहर" कहा जाता था। इस बेहर की सीढ़ियाँ इतनी चौड़ी थीं कि लोग सिर पर बर्तन रखकर आराम से ऊपर-नीचे जा सकते थे।

ग्राम से कुछ दूरी पर वाजला तालाब स्थित था। कहा जाता है कि राजा हाथियों पर बैठकर इस तालाब की सैर करने जाया करते थे। इसके पास हाथी डोल नामक तलैया भी स्थित है , जिसके ऊपर एक विशाल बरगद का वृक्ष है।

कोट का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व

कोट बीला नदी के तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। इस कोट के बाहरी क्षेत्र में वर्तमान दुलचीपुर ग्राम स्थित है। *कोट के परिसर के भीतर आज भी जैन मंदिर , हिन्दू मंदिर, बावड़ी तथा प्राचीन मकानों के अवशेष विद्यमान हैं , जो इस क्षेत्र के प्राचीन वैभव और समृद्ध बसाहट के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।*यद्यपि इन संरचनाओं का अधिकांश भाग अब जीर्ण अवस्था में है, फिर भी वे अपने ऐतिहासिक अस्तित्व की सशक्त छाप आज भी छोड़ते दिखाई देते हैं।

कोट परिसर के समीप *दूल्हादेव का एक प्राचीन मंदिर तथा एक विशाल पीपल का वृक्ष*स्थित है, जिसे स्थानीय लोग "दूल्हादेव" के नाम से संबोधित करते हैं। इस स्थान से संबंधित एक प्रचलित जनश्रुति

है कि *दूल्हादेव के मंदिर के सामने से कोई भी बारात सीधे नहीं निकलती।* इसी कारण गाँव में बारात को मंदिर के सामने से ले जाने के स्थान पर पीछे की ओर से मार्ग परिवर्तित कर ले जाया जाता है। *यह परंपरा आज भी स्थानीय आस्था और लोकविश्वास के रूप में विद्यमान है।*

प्राकृतिक दृष्टि से भी यह स्थल अत्यंत रमणीय और आकर्षक है। बीला ग्राम से इसकी दूरी लगभग 8–10 किलोमीटर तथा दलपतपुर से लगभग 15 किलोमीटर है। नदी, वृक्षों और पहाड़ियों से घिरा यह क्षेत्र *न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है , बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से भी अत्यंत मनोहारी प्रतीत होता है।*

संरक्षण की आवश्यकता

दुलचीपुर (कोट) क्षेत्र के अवशेष इस बात के सशक्त प्रमाण हैं कि यह स्थान किसी समय संगठित , समृद्ध तथा सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बस्ती रहा होगा। यहाँ विद्यमान *परकोटे के अवशेष, खाई, प्राचीन मंदिर , बावड़ियाँ, तालाब, बेहर तथा अन्य संरचनाएँ* इस क्षेत्र की ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्ता को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। किंतु समय के साथ *प्राकृतिक क्षरण, उपेक्षा तथा मानवीय हस्तक्षेप* के कारण इन अवशेषों का अस्तित्व धीरे-धीरे नष्ट होने की स्थिति में पहुँच रहा है। *यदि इनका समय रहते संरक्षण नहीं किया गया , तो यह क्षेत्र अपनी ऐतिहासिक धरोहर को सदा के लिए खो सकता है।*

अतः आवश्यक है कि *इस स्थल का वैज्ञानिक पुरातात्विक सर्वेक्षण कराया जाए* तथा इसे *संरक्षित स्मारक के रूप में विकसित करने* की दिशा में प्रयास किए जाएँ। स्थानीय प्रशासन , पुरातत्व विभाग तथा जनसहभागिता के माध्यम से यहाँ के प्राचीन अवशेषों का *संरक्षण, मरम्मत और अभिलेखन* किया जाना चाहिए। साथ ही *इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व के प्रति स्थानीय समाज में जागरूकता उत्पन्न करना* भी आवश्यक है, जिससे यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सके।

कोट क्षेत्र में प्राप्त जैन अवशेष एवं अन्य पुरातात्विक साक्ष्य

दुलचीपुर (कोट) क्षेत्र में स्थित जैन मंदिर के शिखर के आले में *कुछ श्वेताम्बर जैन मूर्तियाँ* प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है। इन मूर्तियों की उत्पत्ति अथवा यहाँ तक पहुँचने के संबंध में कोई स्पष्ट ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है। तथापि यह तथ्य इस क्षेत्र में किसी समय जैन धर्म की सुदृढ़ उपस्थिति और धार्मिक गतिविधियों का संकेत देता है। इसी क्षेत्र से समीपवर्ती तारपोर आदि स्थानों में भी *अष्टधातु निर्मित श्वेताम्बर जैन प्रतिमाएँ* प्राप्त हुई हैं। उपलब्ध जानकारी के

अनुसार ये प्रतिमाएँ वर्तमान में सुरक्षित रखने के उद्देश्य से *अहमदाबाद के श्वेताम्बर जैन मंदिर* में स्थापित कर दी गई हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस सम्पूर्ण क्षेत्र में प्राचीन काल में जैन धर्म का प्रभाव व्यापक रूप से विद्यमान रहा होगा।

कोट के आसपास कुछ *प्राचीन शिलापट्ट* भी प्राप्त हुए हैं , जिन पर *देवनागरी लिपि में लेखन* तथा कुछ चित्रात्मक आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। इन शिलालेखों की शैली और स्वरूप को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि ये संभवतः किसी *समाधि या स्मारक से संबंधित प्रशस्तियाँ* रही होंगी। यद्यपि इन शिलालेखों का विस्तृत अध्ययन अभी अपेक्षित है , तथापि इनके आधार पर इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि इसी प्रकार का एक शिलापट्ट बीला ग्राम के एक हिन्दू मंदिर में भी स्थापित है, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपरा की निरंतरता को दर्शाता है।

कोट परिसर के समीप स्थित *दूल्हादेव पीपल वृक्ष* के आसपास भी अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ बिखरी हुई अवस्था में प्राप्त होती हैं। इनमें विशेष रूप से *दिगम्बर जैन प्रतिमाएँ तथा रक्षक-देवपालों की मूर्तियाँ* उल्लेखनीय हैं। समय के प्रभाव तथा प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण इनमें से कुछ प्रतिमाएँ वृक्षों और भूमि के भीतर आंशिक रूप से समा गई हैं। यहाँ तक कि कुछ मूर्तियाँ पीपल वृक्ष की जड़ों के बीच फँसी हुई दिखाई देती हैं, जो इस क्षेत्र की प्राचीनता और लंबे कालखंड के प्राकृतिक परिवर्तनों का संकेत देती हैं।

दुर्भाग्यवश इस क्षेत्र में अतीत में *धन की लालसा में अवैज्ञानिक खुदाई* भी की गई , जिसके कारण जैन मंदिर परिसर को काफी क्षति पहुँची है। वर्तमान में यहाँ एक *शिखरबंद जैन मंदिर* विद्यमान है, जो इस स्थान की प्राचीन धार्मिक परंपरा की स्मृति को आज भी जीवित रखे हुए है। यदि इस स्थल का वैज्ञानिक और व्यवस्थित उत्खनन किया जाए , तो संभव है कि यहाँ से और भी महत्वपूर्ण पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हो सकें।

इसके अतिरिक्त यहाँ स्थित *टाठी बेर (प्राचीन बावड़ी)* भी अत्यंत उल्लेखनीय है। यद्यपि वर्तमान समय में यह जलस्रोत लगभग सूख चुका है , फिर भी इसकी संरचना अत्यंत विशाल और प्रभावशाली प्रतीत होती है। इस बावड़ी में प्रयुक्त प्राचीन पत्थर, चौड़े घाट तथा स्थापत्य शैली आज भी इसकी प्राचीनता और स्थापत्य सौंदर्य की साक्षी हैं। ये अवशेष यह संकेत देते हैं कि उस समय यहाँ की जल प्रबंधन प्रणाली अत्यंत विकसित और सुव्यवस्थित रही होगी। इस प्रकार कोट क्षेत्र में प्राप्त ये

सभी पुरातात्विक साक्ष्य इस स्थान को बुन्देलखण्ड क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित करते हैं।

दुलचीपुर (कोट) बुन्देलखण्ड क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थल है। यहाँ की जनश्रुतियाँ , परकोटे के अवशेष , जलस्रोतों की प्रचुरता , धार्मिक स्थल और सामाजिक संरचना यह संकेत करते हैं कि यह स्थान कभी एक समृद्ध और व्यवस्थित ग्राम-नगर रहा होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि इस स्थल का वैज्ञानिक सर्वेक्षण और संरक्षण किया जाए, जिससे इस क्षेत्र के प्राचीन इतिहास और संस्कृति को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सके। दुलचीपुर (कोट) न केवल स्थानीय इतिहास का महत्वपूर्ण भाग है , बल्कि यह बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक धरोहर का भी एक महत्वपूर्ण अध्याय है।